भारतीय वरटिकल डेटा की पुनर्परिभाषा

मौजूदा वर्टिकल डेटा को 1905 में गुरुत्वाकर्षण अवलोकन और परिष्कृत उपकरण के बिना परिभाषित किया गया था और। विकासात्मक परियोजनाओं और बाढ़ मानचित्रण के लिए सटीक ऊंचाई की आवश्यकता होती है और। कुछ सेंटीमीटर के भीतर ऊंचाई सटीकता की आवश्यकता के साथ यह लंबवत डेटाम को फिर से परिभाषित करने के लिए आवश्यक है। जमीनी स्तर पर लगभग 70% पुराने बेंच मार्क या तो मौजूद नहीं हैं या खराब स्थिति में हैं। भारतीय वरटिकल डेटा की पुनर्परिभाषा पर राष्ट्रीय महत्व की एक परियोजना है एवं इसे भारतीय सर्वेक्षण विभाग आरंभ किया गया है। तद्नुसार G&RB ने 2006 में "इंडियन वर्टिकल डेटम की पुनर्परिभाषा" नाम के तहत एक रि – लेवलिंग का कार्यक्रम शुरू किया। ये नई परिभाषित ऊंचाइयां जियोपोटेंशियल नंबरों और हेल्मर्ट ऑर्थोमेट्रिक हाइट्स पर आधारित होगा।

उपलब्धियां:

चरण 1

आगे और पीछे की दिशा मे लगभग 46,000 किमी हाई प्रिसिजन लेवलिंग वरटिकल नियंत्रण का ढांचा पूर्ण कर लिया गया है। रिपोर्ट की अंतिम जांच जारी है।

चरण II

46,000 किमी लंबी लेवलिंग लाइन स्केलटन को आगे और पीछे की दिशा मे लगभग 1,00,000 किलोमीटर के माध्यम से द्वारा सघन किया जाना है ताकि सामान्य उपयोग के लिए नई स्तर की लाइनें उपलब्ध कराने कराई जा सकें। लेवलिंग नेटवर्क का सघनीकरण संबंधित जीडीसी द्वारा किया जा रहा है |